9

स्वानुभव के बिना.....

स्वानुभव के बिना, भ्रमता ही रहा हूँ मैं (2)
विषयों में सदा, रमता छू रहा हूँ मैं । (2)
चहुँगतियों में इन कर्मों में, (2)
भ्रमता ही रहा हूँ मैं ।।टेक।।

कभी स्वर्ग गया, कभी नर्क गया।
कभी मानव बना, तिर्यच बनों (2)
कभी भोगों में, कभी रोगों में । (2)
रुलता ही रहा हूँ मैं ।।टेक।।

निज आतम को कभी जाना नहीं ।
कभी परमातम पहिचाना नहीं ।। (2)
कभी शास्त्रों को, कभी सूत्रों को । (2)
रटता ही रहा हूँ मैं ।।टेक।।

नरतन है मिला, जिनधर्म मिला ।
सद्गुरु अरु, धर्म आगम मिला । (2)
अब चित्त सम्हलकर, अब समकित पाके ।
मुक्ति की चलूँगा मैं ।।
चहुंगतियों में इन कर्मों में, (2)
भ्रमता ही रहा हूँ मैं ।।टेक।।

मैं अपने आत्मा के अनुभव के बिना संसार भ्रमण करता रहा हुँ। मैं पंचेन्द्रिय विषय भोगों में लीन रहा और चारों गतियों में भ्रमण करता रहा हुँ।

मैं आत्म अनुभव न करने के कारण कभी स्वर्ग गया, कभी नरक गया, कभी मनुष्य बना और कभी तिर्यंच गति में जन्म लिया। मैं कभी भोगों में रमकर और कभी रोगों के कारण बहुत दु:खी होता रहा।

मैंने कभी अपने आत्म स्वरूप को नहीं जाना और न ही परमात्मा के स्वरूप को पहचाना। मैं कभी शास्त्रों को तो कभी उसके सूत्रों को पढ़कर ही अपने को धर्मात्मा मानता रहा।

मुझे महाभाग्य से मनुष्य पर्याय और महान जैन धर्म प्राप्त हुआ है, साथ ही दिगम्बर गुरू और जिनागम भी प्राप्त हुये हैं। अब मैं प्रतिज्ञा करता हुँ कि अब तक मैं चारों गतियों और कर्मों में भ्रमण करता रहा हुँ, परन्तु अब अपने मन को आत्मा में लगाऊँगा और सम्यक्दर्शन प्राप्त करके मोक्ष प्राप्त करूँगा।